Ñfr % fo'kne`R;qat; fo/kku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt

laLdj.k % izFke&2013 * izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkse lkxj th egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ vkLFkk nhnh] liuk nhnh

la;kstu % lksuw] fdj.k] vkjrh nhnh] mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFky % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZydqekj xksèkk] 2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV efugkjksa dk jkLrk] t;iqj Qksu % 0141&2319907 ¼?kj½ eks- % 9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj ,&107] cq/k fogkj] vyoj] eks- % 9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh fu;j ykyc`Ùkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh eks- 09818115971] 09136248971

ewY; % 25@& #- ek=k

—: अर्थ सौजन्य :—

Jhefr eatw tSu /keZiRuh Jh nhid tSu
बी–53, शकरपुर, दिल्ली–110092
एवं
गुप्तदान

eqnzd % ikjl izdk'ku] fnYyh Qksu ua- % 9811374961] 9818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com

भक्ति प्रसून

मृत्युञ्जय मण्डल विधान यह, सुन्दर शुभम् सजाया है।
पंच परमेष्ठी की भक्ती को, सबने मिलकर पाया है।।
पूजन भक्ती करने हेतू, अपना कदम बढ़ाते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पद में श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।।

आप सभी के अन्दर यह जिज्ञासा जरूर उठती होगी कि यह आकाश कैसे बना यह बादल कैसे बने, कैसे मिटे यह पुण्य कैसे होता है पाप कैसे, आदि यह अनादि काल से बनते और मिटते रहते हैं सुख दुख भी अनादि से हैं अपने कर्म से हमें अच्छा और बुरा फल प्राप्त होता है। अमृत-चंद आचार्य जी सामायिक पाठ में कहते हैं कि **स्वयं किये जो कर्म-शुभाशुभ फल निश्चिय ही वे देते।** जीव स्वयं ही कर्मों का कर्ता और भोक्ता है जिसने पूर्व में देव, शास्त्र, गुरू का गुणगान, पूजा, अर्चना की और वर्तमान में भी कर रहा है। उसे सुख ही मिलता है। पुण्य संचय कर वह वर्तमान में सुख भोगेगा ही। भविष्य में उसे सुख मिलेगा। जिसने कभी धर्म कार्य किया ही नहीं वह आज दुखी रहता है और भविष्य में रहेगा यह जीवन का कड़वा सच है।

क्योंकि किसान के पास अनाज की कितनी भी कमी आ जाए लेकिन वह बीज के लिए बचाकर ही रखता है। इसी प्रकार पुण्यवान पुण्य का संचय करके रखता है। आज वर्तमान में मानव किसी न किसी बीमारी से धन, दौलत, मकान दुकान यहाँ तक कि परिवार में दुखी ही रहते हैं जब किसी परिस्थिति में उलझ जाते हैं तब उन्हें अपना धर्म और कर्तव्य याद आते हैं जहाँ कहीं मन्दिरों में ढोक लगाते हैं उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहता है कि हम कहाँ जा रहे हैं कभी काली माता, हनुमान, पीरबाबा और गुरुद्वारा भी नहीं छोड़ता उसे बस ठीक होना है घोर मिथ्या में पड़ जाता है। इसलिए पूज्य गुरुदेव ने मानव अधोगति में न जाकर ऊर्ध्व की ओर गमन करें। इसी प्रयास हेतु आचार्य श्री ने ''वृहद महामृत्युञ्जय'' कृति की रचना कर इसे लघु रूप देकर **'मृत्युञ्जय विधान'** की सुन्दर सरल शब्दों में रचना की। इस कृति के माध्यम से गुरुदेव ने आपको सुनहरा अवसर प्रदान किया है पापों की निवृति एवं पुण्य के संग्रह के लिए। अत: सभी भक्त श्रद्धा भक्ति से इस विधान की पूजा भक्ति कर असीम पुण्य का अर्जन करें। अंत में गुरुदेव के चरणों में नव कोटि पूर्वक त्रिकाल नमोस्तु।।

(संघस्थ–आचार्य श्री विशद सागरजी)
(ब्र. सपना दीदी)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥ शान्तये शांतिधारा...

दोहा–**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।

अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी॥4॥
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन॥
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश॥5॥
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है॥
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं॥6॥
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है॥
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा॥7॥
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान॥
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान॥8॥
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप॥
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान॥9॥

दोहा– नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

स्तवन

दोहा– परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हार।
पंचम गति का दीजिए, हमको शुभ उपहार॥

शंभू छन्द

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जग में पावन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम को शत वन्दन॥
इनकी भक्ती जो भी करता, मंगलमय उनका जीवन।
इनके प्रति श्रद्धा करने से, हो जाए सम्यक् दर्शन॥

चत्तारि मंगल हैं जग में, अरहंत सिद्ध साहू मंगल।
रत्नत्रय से सहित धर्म शुभ, उत्तम क्षमा आदि मंगल॥
चत्तारि उत्तम हैं जग में, अरहंत सिद्ध साहू उत्तम।
राग रहित शुभ वीतराग युत, धर्म रहा जग में उत्तम॥

चत्तारि हैं शरण जगत् में, अरहंत सिद्ध साहू शरणं।
देव शास्त्र गुरु शरण श्रेष्ठ हैं, जैन धर्म जग में शरणं॥
मंत्र रहा यह नमस्कार शुभ, सब पापों का नाशक है।
सभी मंगलों में मंगल यह, प्रथम जगत् का शासक है॥

महामंत्र है सार लोक में, पापों का शत्रू अनुपम।
विषहर संसारोच्छेदक शुभ, नाशक कर्म रहा मंत्रम्॥
सिद्धि प्रदायक महामंत्र है, शिव सुखकर्ता रहा महान।
महामंत्र को जपने वाला, पा जाता है केवलज्ञान॥

अन्य शरण कोइ नहीं जगत् में, परमेष्ठी हैं एक शरण।
करुणाकारी हे करुणानिधि!, हृदय बसें तव दोय चरण॥
परमेष्ठी शुभ पाँच हमारे, उनकी हम जय कार करें।
परम शांति हो जाए जगत में, जग के सारे कष्ट हरें॥

(पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्)

महामृत्युंजय विधान पूजा

स्थापना

पंचकल्याणक परमेष्ठी जिन, सहस्रनाम है पूज्य महान।
जैनागम जिन तीर्थ त्रैकालिक, विद्यमान जिन हैं भगवान॥
तीर्थंकर पद के धारी जिन, तीन लोक में रहे महान।
विशद हृदय में भाव सहित हम, करते हैं सबका आह्वान॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

प्रासुक लाए नीर हम, देते जल की धार।
जन्म जरादिक नाश हों, पाएँ शिव पद द्वार॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन घिसकर लाए यह, चढ़ा रहे हम आज।
भव संताप विनाश हो, पाएँ शिवपुर राज॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत से यहाँ, पूज रहे जिन पाद।
अक्षय पद पाएँ विशद, हो विनाश उत्पाद॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित यह लिए, पूजा हेतु विशेष।
काम वाण विध्वंश हो, पाएँ निज स्वदेश॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे नैवेद्य हम, होवे क्षुधा विनाश।
यही भावना भा रहे, पूरी हो मम् आश॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जला पूजा करें, होवे मोह विनाश।
विशद ज्ञान का मम हृदय, होवे शीघ्र प्रकाश॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाते आग में, हम यह खुशबूदार।
अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ शिव पद सार॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे हम फल यहाँ, ताजे शुभ रसदार।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, हो जाए उद्धार॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे जिनराज।
पद अनर्घ्य पाएँ 'विशद', मिले स्वपद साम्राज॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं मृत्युञ्जयी जिनेन्द्र! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांतिधारा के लिए, भर कर लाए नीर।**
इस भाव से मुक्ती मिले, मिल जाए भव तीर॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा– **पुष्प मगाएँ बाग से, पुष्पाजंलि के हेतु।**
अर्चा करते भाव से, पाने शिव का सेतु॥

पुष्पाजंलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा– **प्रथम वलय में हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।**
भक्ती अर्पित कर रहे, पाने सुपद अनर्घ्य॥

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पंच कल्याणक गाए हैं।
तीर्थंकर जिनके चरणों यह, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं श्री भगवज्जिनेन्द्र गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु मंगलकारी।
परमेष्ठी पांचों हैं पावन, पूज रहे हम शुभकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्राष्ट शुभ नाम कहे हैं, तीर्थंकर के जगत महान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान॥3॥

ॐ ह्री अर्हं क्लीं क्रौं श्री भगवज्जिनेन्द्र अष्टाधिक सहस्रनामेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टी, द्वादशांग वाणी पावन।
सम्यक् ज्ञान जगत हितकारी, मुक्ती पथ का है साधन॥ 4॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं षट्खण्डागम् तत्त्वार्थसूत्रादि द्वादशांगेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर चौबीस हुए हैं, भूतकाल में महित महान।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा करते मंगलगान॥5॥

ॐ ह्रीं भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभ नाथ को आदी करके, महावीर है अन्तिम नाम।
चौबीसों जिनके चरणों में, मेरा बारम्बार प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर प्रकृति के धारी, होंगे तीर्थंकर चौबीस।
सुर नर पशु के इन्द्र चरण में, नत हो स्वयं झुकाते शीश॥7॥

ॐ ह्रीं भविष्यतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बीस तीर्थंकर ढाई दीप के, पंच विदेहों में विद्यमान।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा करते यहाँ महान॥8॥

ॐ ह्रीं विहरमान विंशति तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **तीर्थंकर पद वन्दना, करते हम कर जोर।**
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव रत्नत्रय कल्याणक तीर्थ भूमि देव शास्त्र गुरुभ्यो नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **परमेष्ठी कल्याण शुभ, सहस्रनाम तीर्थेश।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने निज स्वदेश॥

(शम्भू छन्द)

कर्म घातिया नाश करें जो, वह अर्हत् कहलाते हैं।
सर्व कर्म के नाशी जग में, सिद्ध सुपद को पाते हैं॥
परमेष्ठी आचार्य पालने, वाले होते पंचाचार।
उपाध्याय पढ़कर संतो को, ज्ञान सिखाते अपरम्पार॥1॥
आत्म साधना करने वाले, होते हैं साधू गुणवान।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, बतलाए हैं पंच कल्याण॥
सहस्राष्ट हैं नाम प्रभु के, गुण भी पाते हैं तीर्थेश।
सार्थक नाम प्राप्त करते जिन, लक्षण धारी कहे जिनेश॥2॥
काल अनादी से तीर्थंकर, तीर्थ प्रर्वतन करें महान।
दिव्य देशना संयम पाकर, प्राणी पाते पद निर्वाण॥
भूतकाल में हुए जिनेश्वर, वर्तमान के भी चौबीस।
और भविष्यत में होयेंगे, विद्यमान तीर्थंकर बीस॥3॥
मृत्युञ्जय को पाने वाले, जग में होते हैं तीर्थेश
मोक्ष मार्ग के अनुपम साधक, प्राप्त करें जो सुगुण विशेष।

पूजा करते आज यहाँ हम, मृत्युञ्जय पदवी पाएँ।
भवसिन्धू को पार करें हम, इस भव में ना भटकाएँ॥

दोहा– **विशद भाव से हम यहाँ, करते विशद विधान।**
सुख शांती सौभाग्य पा, पाएँ पद निर्वाण॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **सुख शांती की कामना, करते जग के जीव।**
जिन भक्ती करके 'विशद', पावें पुण्य अतीव॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाजंलिं क्षिपेत्

ऋद्धि विभूषित ऋषि

स्थापना

श्रेष्ठ ऋद्धियों से भूषित ऋषि, सर्व जगत में कहे महान।
गणधर पद से आप विभूषित, जिनवाणी करते व्याख्यान॥
मृत्युंजयि जिनवर की अर्चा, करके मृत्युंजय पाते।
सुख सम्पत्ति सौभाग्य प्राप्त कर, अन्त में शिवपुर को जाते॥

दोहा– **ऋद्धि सिद्धि दाता ऋषी, करें कर्म संहार।**
आह्वानन करते हृदय, नत हो बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल नीर चढ़ायें, अन्तर की प्यास मिटाएँ।
हे ऋषिवर ऋद्धीधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन भव ताप मिटाए, हम यहाँ चढ़ाने लाए।
हे ऋषिवर ऋद्धीधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह अक्षयकारी, हम चढ़ा रहे मनहारी।
हे ऋषिवर ऋद्धीधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

भव रोग नशाने आये, यह पुष्प चढ़ाने लाए।
हे ऋषिवर ऋद्धिधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते स्वामी, अब क्षुधा की होवे हानी।
हे ऋषिवर ऋद्धीधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पावन यह दीप जलाते, जो मोह पूर्ण विनशाते।
हे ऋषिवर ऋद्धीधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! दीपं निर्व. स्वाहा।

हैं अष्ट कर्म दुखकारी, नश जाएँ हे अनगारी।
हे ऋषिवर ऋद्धीधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! धूपं निर्व. स्वाहा।

शिव फल की चाह सताए, फल यहाँ चढ़ाने लाए।
हे ऋषिवर ऋद्धीधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! फलं निर्व. स्वाहा।

जो हैं अनर्घ पददायी, यह अर्घ्य चढ़ाते भाई।
हे ऋषिवर ऋद्धीधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **अनुपम गुण हैं आपके, दिव्य आपका रूप।**
शान्ती धारा दे रहे, पाने निज स्वरूप॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा– **अधिकारी शिव मार्ग, के पावन परम ऋशीष।**
पुष्पांजलि करते 'विशद', चरण झुका के शीश॥

पुष्पाजंलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलयः

अष्ट ऋद्धियाँ है विशद, जीवन में सुखकार।
पूजा करके भव्य जन, पावें सुख भण्डार॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अष्ट ऋद्धियों के अर्घ्य

शम्भू छन्द

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, आगम में बतलाए हैं।
उत्तम तप कर तीर्थंकर जिन, स्वयं आप प्रगटाए हैं॥
ऋद्धी पाने वाले जिन मुनि, होते हैं मंगलकारी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, उनकी हम अतिशयकारी॥1॥

ॐ ह्रीं बुद्धि ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ हैं भेद ऋद्धि चारण के, अग्नी जल वायू आकाश।
पुष्प मेघ जल ज्योतिष जंघा, चारण भेद कहे हैं खास॥
ऋद्धीधारी जिन संतों के, चरणों ध्यान लगाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, प्राप्ती अरु प्राकम्य महान।
अप्रतिघात ईशत्व वासित्व अरु, काम रूपिणी अन्तर्धान॥
एकादश यह भेद कहे हैं, ऋद्धि विक्रिया के शुभकार।
ऋद्धीधारी जिन संतों के, पद में वन्दन बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दीप्त तप्त अरु उग्र तपो तप, घोर तपो तप हैं विख्यात।
अघोर ब्रह्मचर्य घोर पराक्रम, भेद सुतप ऋद्धी के सात॥
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, जग में होते अपरम्पार।
उनके चरणों वन्दन करते, भाव सहित हम बारम्बार॥4॥

ॐ ह्रीं सुतप ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल ऋद्धी के तीन भेद हैं, मन बल वचन काय बल वान।
ऋद्धीधारी जिन सन्तों का, करते हैं प्राणी गुणगान॥
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, जग में होते अपरम्पार।
उनके चरणों वन्दन करते, भाव सहित हम बारम्बार॥5॥

ॐ ह्रीं बल ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्ष्वेल जल्ल मल आमर्षौषधी, विडौषधि सर्वौषधि वान।
मुख निर्विश दृष्टी निर्विश यह, आठ भेद औषधि पहिचान॥
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, जग में होते अपरम्पार।
उनके चरणों वन्दन करते, भाव सहित हम बारम्बार॥6॥

ॐ ह्रीं औषधि ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षीर मधू अमृत घृतस्रावी, आशीर्विष दृष्टी को धार।
रस ऋद्धी के भेद बताए, जैनागम में सात प्रकार॥
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, जग में होते अपरम्पार।
उनके चरणों वन्दन करते, भाव सहित हम बारम्बार॥7॥

ॐ ह्रीं रस ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अक्षीण महानस ऋद्धी, अरु अक्षीण महालय जान।
है अक्षीण ऋद्धी शुभकारी, दो भेदों युत श्रेष्ठ महान॥
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, जग में होते अपरम्पार।
उनके चरणों वन्दन करते, भाव सहित हम बारम्बार॥8॥

ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठ ऋद्धियों के होते हैं, अड़तालिस या चौंसठ भेद।
भाव सहित हम पूजा करते, नाश होय मम सारा खेद॥
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, जग में होते अपरम्पार।
उनके चरणों वन्दन करते, भाव सहित हम बारम्बार॥9॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धि धारक श्री अर्हंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **अतिश्यकारी ऋद्धियाँ, जग में पूज्य त्रिकाल।**
उनकी अब गाते यहाँ, भाव सहित जयमाल॥

चौपाई

काल अनादी से हे भाई, कर्म भूमियाँ हैं सुखदायी।
कर्म भूमियों में शुभकारी, तीर्थंकर हों मंगलकारी॥
तीर्थंकर के गणधर जानो, चार ज्ञान धारी हों मानो।
वह भी श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते, अविकारी निर्ग्रंथ कहाते॥
मुनिवर बुद्धि ऋद्धि शुभ पाए, जिसके भेद अठारह गाए।
औषधि ऋद्धी दूजी जानो, आठ भेद जिसके पहिचानो।
तृतिय बल ऋद्धी शुभ गाई, तीन भेद से युक्त बताई॥
तप ऋद्धी चौथी पहिचानो, सप्त भेद जिसके पहिचानो।
रस ऋद्धी पंचम कहलाई, छह भेदों से सहित बताई॥
श्रेष्ठ विक्रिया छठवी जानो, भेद एकादश जिसके मानो।
सप्तम चारण ऋद्धी गाई, नौ भेदों युत जो कहलाई॥
अष्टम अक्षीण ऋद्धी जानो, दो भेदों युत जो पहिचानो।
चौंसठ उत्तर भेद गिनाए, सर्व केवली गणधर पाए॥
होकर अष्टकर्म के नाशी, बन जाते शिवपुर के वासी॥
हम भी श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पायें, उत्तम तप धर कर्म नशाएँ।
'विशद' ज्ञान अनुपम प्रगटाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥

दोहा– **तीर्थंकर चौबीस के, गणधर रहे महान।**
पाकर यह जो ऋद्धियाँ, पाते पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतु:षष्ठि ऋद्धि विभूषित मुनीन्द्र! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **ऋद्धी से सिद्धी विशद, पावें संत महान।**
कर्म नाश कर पूर्णत: पाते पद निर्वाण॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाजंलिं क्षिपेत्

महामंत्र वर्णाक्षर पूजन

स्थापना

महामंत्र णवकार लोक में, सब मंत्रों का है स्वामी।
मात्राएँ अट्ठावन जिसमें, अक्षर पैंतिस हैं नामी॥
यंत्र मंत्र का मूल यही है, मंगल उत्तम शरण महान।
मृत्युंजयी है मंत्र जहाँ में, जिसका हम करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

झारी में जल भर लाए, त्रय धार कराने आए।
है जन्म जरादिकनाशी, हो सम्यक् ज्ञान प्रकाशी॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कर्पूर मिलाए, भव ताप नशाने आए।
जो है शीतल शुभकारी, संताप विनाशनकारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल के पुंज बनाए, जल में धोकर के लाए।
हम अक्षय पदवी पाएँ, भव सिन्धू से तर जाएँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की माल बनाते, पूजन में यहाँ चढ़ाते।
हो नाश काम की व्याधी, हम धारण करें समाधी॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, हम चढ़ा रहे मनहारी।
हैं क्षुधा रोग के नाशी, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाशी॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के दीप जलाएँ, मिथ्यात्व मोह विनशाएँ।
हम रत्नत्रय निधि पाएँ, फिर शिव नगरी को जाएँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुरभित धूप जलाएँ, कर्मों का धूम उड़ाएँ।
हम यही भावना भाएँ, गुण आठ शीघ्र प्रगटाएँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस मधुर हम लाएँ, चरणों में नाथ चढ़ाएँ।
जो है अति सरस निराले, मुक्ती पद देने वाले॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो हैं शास्वत पददायी।
हम भी शिव पदवी पाएँ, भव में ना अब भटकाएँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत देव! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांती पाने के लिए, देते शांती धार।**
जीवन शांतीमय बने, होय आत्म उद्धार॥ *शान्तये शांतिधारा*

पूजा करते आज हम, लेकर सुरभित फूल।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, करें कर्म निर्मूल॥ *पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

तृतीय वलयः

दोहा– **लाख चौरासी मंत्र का, महामंत्र है भूप।**
निज भावों से ध्याय जो, पावे शिव स्वरूप॥
(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

महामंत्र अर्घ्यावली

(अर्घ शम्भू छन्द)

प्रथम णमो अरिहंताण में, अक्षर सात बताए हैं।
महामंत्र इस पद की हम भी, पूजा करने आए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं प्रथम पदे सप्ताक्षर अरहन्त पद विभूषित णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितिय णमो सिद्धाणं पद में, अक्षर पाँच रहे मनहार।
महामंत्र की पूजा करके, प्राणी होते भव से पार॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं द्वितीय पदे पंचाक्षर संयुक्त सिद्ध पद विभूषित णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय णमो आयरियाणं पद, में अक्षर बतलाए सात।
पंचाचार के धारक की जो, महिमा बतलाए हैं भ्रात॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं तृतीय पदे सप्ताक्षर संयुक्त आचार्य पद विभूषित णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथा णमो उवज्झायाणं पद, के अक्षर भी जानो सात।
महामंत्र की पूजा करके, बन जाती है बिगड़ी बात॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं चतुर्थ पदे सप्ताक्षर संयुक्त उपाध्याय पद विभूषित णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो लोए सव्व साहूणं पद, में अक्षर नौ बतलाए।
महामंत्र की पूजा करने आज यहाँ पर हम आए॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं पंचम पदे पंचदश मात्रा संयुक्त साधु पद विभूषित णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार के पाँचों पद में, अक्षर हो जाते पैंतीस।
महामंत्र की पूजा करके, झुका रहे हम नत हो शीश॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं पंच त्रिंशत अक्षर संयुक्त णमोकार महामन्त्र

बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युजंयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धडि छन्द)

अरहंत सुपद गाया महान, ग्यारह मात्रा युत है प्रधान।
महामंत्र पूजते यहाँ आन, करते भावों से विशद ध्यान।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं प्रथम पदे एकादश मात्रा संयुक्त अरहन्त पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है सिद्ध सुपद शुभ जगज्येष्ठ, नौ मात्राएँ जिसमें रहीं श्रेष्ठ।
महामंत्र पूजते यहाँ आन, करते भावों से विशद ध्यान।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं द्वितीय पदे नवमात्रा संयुक्त सिद्ध पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य सुपद गाए जिनेश मात्राएँ ग्यारह हैं विशेष।
महामंत्र पूजते यहाँ आन, करते भावों से विशद ध्यान।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं तृतीय पदे एकादश मात्रा संयुक्त आचार्य पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथा पद गाया उपाध्याय, ग्यारह मात्रा युत है सुखाय।
महामंत्र पूजते यहाँ आन, करते भावों से विशद ध्यान।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं चतुर्थ पदे एकादश मात्रा संयुक्त उपाध्याय पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सर्व साधु जग में महान, पन्द्रह मात्राएँ हैं प्रधान।
महामंत्र पूजते यहाँ आन, करते भावों से विशद ध्यान।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं पंचम पदे पंचदश मात्रा संयुक्त साधु पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात्राएँ अट्ठावन विशेष, पाँचों पद में गाए जिनेश।
महामंत्र पूजते यहाँ आन, करते भावों से विशद ध्यान।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युजंयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज : नशे घातिया...

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, अर्हत् पदवी पाए।
केवलज्ञान जगाने वाले, मंगल प्रथम कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिविध कर्म से रहित हुए हैं, आठों कर्म नशाए।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया, मंगल सिद्ध कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।14।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता भाव धारने वाले, रत्नत्रय के धारी।
सहते हैं उपसर्ग परीषह, साधू मंगलकारी।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।15।।

ॐ ह्रीं साधुमंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, जानो जग हितकारी।
सुख शांती सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।16।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्म-मंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज : नन्दीश्वर श्री जिन धाम...

हे लोकोत्तम! अरहन्त, जग-जन हितकारी।
हो जाए भव का अन्त, भव-भय दुख हारी।।

हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हन्त लोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सिद्ध शिला के ईश, शिव सुख के कर्त्ता।
हे लोकोत्तम! जगदीश, कर्मों के हर्त्ता।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध लोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यादि निर्ग्रंथ, रत्नत्रय धारी।
यह लोकोत्तम है संत, अतिशय अविकारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधु लोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी उपदिष्ट, जैन धरम जानो।
है लोकोत्तम जग इष्ट, हितकारी मानो।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

शरण श्रेष्ठ है अर्हन्तों की, सारे जग में पावन।
सुख शांती आनन्द प्राप्त हो, जीवन हो मन भावन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हत्शरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शरण है मंगलकारी, हम भी शरणा पाएँ।
कर्म नाशकर अपने सारे, भव में न भटकाएँ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।22।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनाचार्य उपाध्याय साधू, होते पञ्चाचारी।
शरण प्राप्त हो हमको उनकी, पाने पद अविकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।23।।

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, उत्तम शरण कहाये।
पाया नहीं है अब तक हमने, अतः जगत भटकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।24।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार में पैंतिस अक्षर, मात्राएँ अट्ठावन जान
मंगलोत्तम शुभ शरण भूत हैं, परमेष्ठी इह जगत महान।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युजंयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **णमोकार मंगलोत्तम, शरण चार शुभकार।**
बीज शक्ति शुभ मंत्र हम, ध्याते बारम्बार।।

(आल्हा छन्द)

पैंतीस अक्षर महामंत्र में, अट्ठावन मात्राएँ जान।
मंगल चार बताए उत्तम, शरण चार हैं जगत प्रधान।।
ॐ ह्रीं अर्हं बीजाक्षर, क्लीं क्रों हैं शक्तीवान।
मृत्युंजय पद देने वाले, कहे जगत में महित महान।।
बीजाक्षर की शक्ती अनुपम, मंत्रों से जानी जाती।
सर्प दंश व्यंतर पीड़ा में, अपनी शक्ती दिखलाती।।
मंत्रों की शक्ती से प्राणी, रोग से मुक्ती पाते हैं।
निर्धन भी शुभ मंत्र जाप कर, भाग्यवान हो जाते हैं।।
अक्षर क्षय से रहित कहे हैं, स्वर व्यंजन आदिक शुभकार।
सत्ताइस स्वर होते अनुपम, व्यंजन पैंतिस मंगलकार।।

जिह्वामूलिय उपधिमानिय, अनुस्वार अरु कहा विसर्ग।
चौंसठ अक्षर वर्णमाला के, ध्याकर पायें हम अपवर्ग॥

दोहा– **मृत्युंजय शुभ मंत्र है, मृत्युंजय भगवान।**
मृत्युंजय पद प्राप्त कर, पाएँ पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं चत्तारि मंगललोकोत्तमशरण पद विभूषित णमोकार महामन्त्र बीजाक्षर शक्ति युत मृत्युजंयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **यंत्र मंत्र शुभ तंत्र है, सुख शांती की खान।**
पाते वह सौभाग्य जो, करते 'विशद' विधान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

तीर्थंकर नवदेव एवं नवग्रह निवारक जिन पूजन

स्थापना

तीर्थंकर नव देव पूज्य हैं लोकोत्तम मंगलकारी।
नवग्रह अष्ट कर्म के नाशी, मन वाच्छित फल दातारी॥
तीन लोक में जिनकी महिमा, का प्राणी करते गुणगान।
विशद हृदय में आज यहाँ हम, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चौपाई

यह प्रासुक नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम गंध चढ़ाते भाई, निर्मल सुरभित सुखदायी॥
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल चढ़ाएँ, हम अक्षय पद पा जाएँ॥
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम बाण विनशाएँ, मंगलमय पुष्प चढ़ाएँ।
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक घृत के प्रजलाएँ, पूजा कर मोह नशाएँ।
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुरभित धूप जलाएँ, कर्मों का नाश कराएँ।
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह पूजा को लाएँ, हम मोक्ष महा फल पाएँ।
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अब पद अनर्घ्य पा जाएँ।
नवग्रह से मुक्ती पाएँ, नव देवों को हम ध्यायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांती धारा दे रहे, शांती पाने आज।**
चाह रहे हम भी विशद, मुक्ति वधु का ताज॥

शान्तये शान्तीधारा

दोहा– **पुष्पांजलि करने लिए, पावन हमने फूल।**
यह असार संसार तज, पाएँ शिव पद मूल॥

पुष्पाजंलिं क्षिपेत्

चतुर्थ वलयः

दोहा– **ग्रहाराध्य जिन देव नव, जग में रहे महान।**
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हम गुणगान॥

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

(अर्ध शम्भू छन्द)

भरत क्षेत्र में निर्वाणादिक, तीर्थंकर गाए चौबीस।
भूतकाल में हुए यहाँ हम, झुका रहे हैं चरणों शीश॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर, वर्तमान के कहलाए।
अर्घ्य चढ़ाकर जिनके चरणों, वन्दन करने हम आए॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पद्म नाम आदिक भविष्य में, तीर्थंकर होंगे चौबीस।
अर्घ्य चढ़ाकर जिनके चरणों, झुका रहे हम अपना शीश॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं भविष्यत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते हैं बीस।
जिनकी पूजा करने वाले, होते सिद्धशिला केईश॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं विदेह चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भरतक्षेत्र सम ऐरावत में, तीर्थंकर होते चौबीस।
तीन काल में हुए होयेंगे, जिन पद वन्दन है धर शीश॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं ऐरावत क्षेत्रस्य तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नव देवता के अर्घ्य

कर्म घातिया नाश किए जिन, दोष अठारह रहित महान।
करुणाकर हैं जगत हितैषी, मंगलमय अर्हत् भगवान॥6॥

ॐ ह्रीं अनन्त भवार्णव भय निवारक श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म नाशकर, उत्तम पद पाए निर्वाण।
अविनाशी अक्षय अखण्ड पद, पाए श्री सिद्ध भगवान॥7॥

ॐ ह्रीं अनन्त भवार्णव भय निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार समीति गुप्ती, आवश्यक तप तपें महान्।
जैनाचार्य धर्म के धारी, त्रिभुवन गुरू कहे गुणवान॥8॥

ॐ ह्रीं अनन्त भवार्णव भय निवारक श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञाता जग में रहे प्रधान।
स्व-पर के उपकार हेतु जो, देते सबको सम्यक् ज्ञान॥9॥

ॐ ह्रीं अनन्त भवार्णव भय निवारक उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, रत्नत्रय धारी गुणगान।
परम दिगम्बर निर्भय साधू, जैन धर्म की अनुपम शान॥10॥

ॐ ह्रीं अनन्त भवार्णव भय निवारक श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम अहिंसामयी धर्म की, महिमा जो भी गाते हैं।
सुख शांती सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महल को जाते हैं॥11॥

ॐ ह्रीं जिनधर्म अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐकारमय जिनवाणी को, अपने हृदय सजाते हैं।
विशद ज्ञान के धारी बनकर, केवलज्ञान जगाते हैं॥12॥

ॐ ह्रीं जैनागम अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्बों की, अर्चा करते बारम्बार।
अल्पकाल में भव्य जीव वह, शिवपद पाते अपरम्पार॥13॥

ॐ ह्रीं जिनचैत्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालय, तीन लोक में रहे महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, गाते हैं प्रभु का गुणगान॥14॥

ॐ ह्रीं जिनचैत्यालय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवग्रह निवारक (छन्द जोगीरासा)

रवि ग्रह श्रेष्ठ प्रतापी जानो, यश कीर्ति उपजावे।
राशी मध्य बली जब होवे, कीर्ति पूर्ण नशावे।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।15।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्र समान सुउज्ज्वल कीर्ति, चन्द्र सुग्रह फैलाए।
राशि में वक्री बनकर के, उल्टा असर दिखाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।16।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगल ग्रह मंगलमयी जानो, जग में मंगलकारी।
वक्री बन जाए राशि में, बने अमंगलकारी।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।17।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ स्थान प्राप्त कर बुध ग्रह, बुद्धीमान बनाए।
ज्योतिष लेखक वाद कुशलता, शब्द कुशलता पाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।18।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरु ग्रह महिमाशाली माया, गुरुतम पद दिलवाए।
सच्चारित्र वान सद्धर्मी, शुभ स्थान दिलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।19।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभादि अष्ट जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काव्य कवि ऐश्वर्य सरलता, वात्सल्य गुण पाए।
शुक्र रहे राशी में वक्री, तो अपयश फैलाए।।

जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।20।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मृत्यु संकट सेवक तस्कर, क्रूर प्रवृत्ति कराए।
शुभ स्थान मिले राशी में, बहु यश फैलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।21।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

राहु ग्रह कटु वक्ता रोगी, दुष्ट प्रवृत्ति कराए।
नर को विधु नारी को विधवा, जैसे दुःख दिलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।22।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केतू ग्रह वक्री बनकर के, अतिशय दुखी बनाए।
तंत्र मंत्र जादू टोना कृत, दर्द घाव दिलवाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।23।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर के गुण की महिमा, आज यहाँ पर हम गाते।
नवग्रह की पीड़ा से बचने, हे प्रभु! चरणों सिर नाते।।
वास्तु दोष दूर हों सारे, यही भावना हम भाते।
'विशद' शांति सौभाग्य जगाने, अर्घ्य चढ़ाने हम आते।।24।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म विनाश जिन के अर्घ्य

प्रभु ज्ञानावरणी कर्म नाश, फिर करें ज्ञान केवल प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।25।।

ॐ ह्रीं ज्ञाना वरणी कर्म विनाश जिन अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन कर्म दर्शनावरण नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।26।।
ॐ ह्रीं दर्शन वरणी कर्म विनाश जिन अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जब करें वेदनीय का विनाश, गुण अव्याबाध में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।27।।
ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाश जिन अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म से रहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।28।।
ॐ ह्रीं मोह कर्म कर्म विनाश जिन अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिन आयु कर्म का करे विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।29।।
ॐ ह्रीं आयु कर्म कर्म विनाश जिन अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु नाम कर्म करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।30।।
ॐ ह्रीं नाम कर्म कर्म विनाश जिन अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ना गोत्र कर्म का रहा काम, गुण पाए अगुरु लघु रहा नाम।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।31।।
ॐ ह्रीं गोत्र कर्म कर्म विनाश जिन अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु अन्तराय का कर विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।32।।
ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म कर्म विनाश जिन अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **तीर्थंकर नव देवता, आठ कर्म बलवान।**
ग्रहशांती को पूजते, नव ग्राहाराध्य महान।।

चौपाई

पद्मप्रभु जिनवर अविकारी, होते रविग्रह पीड़ा हारी।
चन्द्र सुग्रह के हैं परिहारी, चन्द्रप्रभु जी मंगलकारी।।

वासुपूज्य जिनराज कहाते, मंगल ग्रह का दोष नशाते।
विमलनाथ धर्म जिन स्वामी, शांति कुन्थु अर अन्तर्यामी।।
वर्धमान जिनपद को ध्यायें, बुध अरिष्ट ग्रह शांती पायें।
ऋषभाजित सुपार्श्व जिनदेवा, अभिनन्दन शीतल पद सेवा।।
सुमति श्रेय सम्भव पद ध्याये, शुक्र अरिष्टग्रह शांती पाए।
मुनिसुव्रत जिन पूज रचाए, शनिग्रह शांति तुरत हो जाए।।
नेमिनाथ जिन पूजे भाई, राहू ग्रह की शांती पाई।
मल्लि सुपार्श्व जिन पूज रचाते, केतू ग्रह की शांती पाते।।
अर्हत् सिद्धाचार्य कहाए, उपाध्याय साधू कहलाए।
जैन धर्म जैनागम भाई, चैत्य जिनालय हैं सुखदायी।।
पावन यह नव देव कहाए, शांति मिले इन सबको ध्याये।
'विशद' भाव से पूज रचाएँ, वह भी शिव पदवी को पाएँ।।
अष्ट कर्म होते दुखकारी, नाश करें जिनवर अविकारी।
मृत्युंजय पदवी जो पावें, शिवपुर अपना धाम बनावें।।

दोहा– **नवग्रह शांती के लिए, पूजें जिन अर्हंत।**
नव देवों की भक्ति से, होवे भव का अन्त।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्वतीर्थंकर नवदेव! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **पूज रहे जिन पद कमल, भक्ति भाव के साथ।**
नव देवों के चरण में, झुका रहे हम माथ।।
इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

तीर्थंकर गणधरादि बीजाक्षर पूजा

स्थापना

तीर्थंकर गणधर ऋद्धीधर, के पद शीश झुकाते हैं।
बीजाक्षर हैं मंत्र निराले महिमा उनकी गाते हैं।।
सम्यक् तप करते जिन मुनिवर, तीन लोक में कहे प्रधान।
विशद हृदय के आसन पर हम, करते भाव सहित आह्वान।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! अत्र अवतर अवतर संवौषट्

आह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

झारी में जलभर लाए, त्रयधार कराने आए।
है जन्म जरादी नाशी, हो सम्यक्ज्ञान प्रकाशी।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कर्पूर मिलाए, भव ताप नशाने आए।
जो है शीतल शुभकारी, संताप विनाशनकारी।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल के पुंज बनाए, जल में धोकर लाए।
हम अक्षय पदवी पाएँ, भव सिन्धू से तर जाएँ।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की माल बनाते, पूजन में यहाँ चढ़ाते।
हो नाश काम की व्याधी, हम धारण करें समाधी।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, हम चढ़ा रहे मनहारी।
हैं क्षुधा रोग के नाशी, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के दीप जलाएँ, मिथ्यात्व मोह विनशाएँ।
हम रत्नत्रय निधि पाए, फिर शिव नगरी को जाएँ।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुरभित धूप जलाए, कर्मों का धूम उड़ाएँ।
हम यही भावना भाएँ, गुण आठ शीघ्र प्रगटाएँ।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस मधुर हम लाए, चरणों में नाथ चढ़ाए।
जो है अतिसरस निराले, मुक्ती पद देने वाले।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है शास्वत पददायी।
हम भी शिव पदवी पाएँ, भव में ना अब भटकाएँ।।
ॐ ह्रीं सर्व तीर्थंकर, गणधर ऋद्धिधर! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।**
जीवन शांति मन बने, होय आत्म उद्धार।। *शान्तये शांतिधारा*

पूजा करते आज हम, लेकर सुरभि फूल।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, करें कर्म निर्मूल।। *पुष्पांजलिं क्षिपेत*

पंचम वलयः

दोहा– **बीजाक्षर जो वर्ण हैं, अनुपम शक्तीवान।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, गुण के रहे निधान।।
(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

बीजाक्षर के अर्घ्य

'ॐ' कहा परमेष्ठी वाचक, जिसकी शक्ती रही अपार।
रक्षा करो हमारी हे जिन, हो जाए आतम उद्धार।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ॐ' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ह्रीं' रहा बीजाक्षर उत्तम, जिसमें चौबिस रहे जिनेश।
भिन्न-भिन्न रंगों में जिनसे, ध्यान प्रभु का होय विशेष।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ह्रीं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हं' पूज्य हैं तीन लोक में, जिसकी महिमा रही महान।
जिसके चिन्तन मनन ध्यान से, मानव बन जाते भगवान।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'अर्हं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्लीं' रहा बीजाक्षर अनुपम, शत्रू की शक्ति रोधक।
पूज रहे हम भक्ती भाव से, जो है आतम का बोधक।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'क्लीं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजाक्षर है क्रों श्रेष्ठ शुभ, भव का करता पूर्ण विनाश।
पूजा भक्ती करने वाले, की हो जाती पूरी आश।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं क्रौं पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्लूं' विशद बीजाक्षर जानो, ऋद्धि सिद्धि दायक सद्ज्ञान।
जो है अनुपम शक्ती दायक, भेद ज्ञान दायक गुण खान।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ब्लूं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षीं' बीजाक्षर की शक्ती में, देव रहे आसक्त प्रधान।
देव सभी परिवार सहित तुम, रक्षा करो यहाँ पर आन।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'क्षीं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीं' बीजाक्षर श्री का दायक, मंगलमय जो है शुभकार।
श्री जिनवर की पूजा होती, भक्तों को श्री की दातार।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'श्रीं' पद विभूषित युत मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षाकारी 'अं' बीजाक्षर, आदिवर्ण है मंगलकार।
जिसका ध्यान किए जिन पद में, शांती होती अपरम्पार।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'अं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तिमान है 'धं' बीजाक्षर, धारण करो हृदय में आप।
ध्यान करो जिसका त्रियोग से, हरने वाला हर संताप।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'धं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उ' बीजाक्षर की शक्ती का, दिखता नहीं है पारावार।
पूजा करने से जिन वर की, जीवन होता मंगलकार।।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'उ' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'छं' बीजाक्षर है शुभकार, पाप द्वेष आदिक क्षयकार।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'छं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लं' बीजाक्षर रहा महान, होता जो लालित्य प्रधान।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'लं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वं' बीजाक्षर दे वरदान, सौख्य श्री पाते इंसान।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'वं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रं' बीजाक्षर रक्षाकार, जो क्लेश करता क्षयकार।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'रं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सं' बीजाक्षर साहसवान, करे भक्त को जो गुणवान।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस।।16।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'सं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ह्रूँ' बीजाक्षर हर्ष अपार, देने वाला अपरम्पार।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस।।17।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ह्रूँ' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ह्राँ' बीज हमदर्दी वान, सर्व दुखों को हरता आन।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस।।18।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ह्राँ' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ह्रूँ' बीज है शक्तीवान, शिव फलदायी महिमावान।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ह्रूँ' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ह्रौं' बीज है कोप निवार, मनवाच्छित फल का दातार।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस॥20।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ह्रौं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'छः' बीजाक्षर दुःख विनाश, करके करता पूरी आश।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'छः' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सं' बीजाक्षर है शुभकार, सुख सम्पत्ती का दातार।
जिन पूजा से विघ्न विनाश, भव्यों की हो पूरी आस॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'सं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल टप्पा

'क्ष्वीं' बीजाक्षर सुख सम्पत्ति का, दाता शुभकारी।
वाणीपति जिन पद के पूजें, बनते शिवकारी॥
जिनेश्वर हैं मंगलकारी।
मोक्षमार्ग के नेता होते, जिन महिमाकारी–॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'क्ष्वीं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्म्ल्व्र्यूं' बीजाक्षर भाई, है शक्तिकारी।
सुख शांती सौभाग्य प्रदायक, पूजा मनहारी॥
जिनेश्वर हैं मंगलकारी
मोक्षमार्ग के नेता होते, जिन महिमाकारी॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'क्म्ल्व्र्यूं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्म्ल्व्र्यूं' है शक्ति शवल शुभ, दुष्ट शक्तिहारी।
सम्यक् शक्ती जिन पूजा से, हो विपदाहारी॥
जिनेश्वर हैं मंगलकारी।
मोक्षमार्ग के नेता होते, जिन महिमाकारी॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'पम्ल्व्र्यूं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'फम्ल्व्र्यूं' शक्ती है अनुपम, भवि मुक्ती कारी।
श्री जिनकी पूजा है जग में, कर्म शक्ति हारी॥
जिनेश्वर हैं मंगलकारी।
मोक्षमार्ग के नेता होते, जिन महिमाकारी॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'फम्ल्व्र्यूं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'र्म्ल्व्र्यूं' शक्ती की महिमा, जानें नर नारी।
निज गुण को पाते हैं प्राणी, शीतल गुणधारी॥
जिनेश्वर हैं मंगलकारी।
मोक्षमार्ग के नेता होते, जिन महिमाकारी॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'र्म्ल्व्र्यूं' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ, ॠ, ऌ ॡ मनहारी।
स्वर भूषित जिनवर की महिमा, गाते अनगारी॥
जिनेश्वर हैं मंगलकारी।
मोक्षमार्ग के नेता होते, जिन महिमाकारी॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ए ऐ ओ औ अं अः स्वर, हैं महिमाकारी।
गुण अनन्त के धारी जिनकी, पूजा शुभकारी॥
जिनेश्वर हैं मंगलकारी।
मोक्षमार्ग के नेता होते, जिन महिमाकारी॥॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ए ऐ ओ औ अं अः' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

क ख ग घ ङ बीजाक्षर, ऋद्धि सिद्धि के दाता।
श्री जिनके पद पूजें जो नर, पाए भव की साता॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'क ख ग घ ङ' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

च छ ज झ ञ बीजाक्षर, व्यंजनवत् हैं सारे।
श्री जिनवर की पूजा में जो, बनते 'विशद' सहारे॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'च छ ज झ ञ' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ट ठ ड ढ ण बीजाक्षर, मन वाञ्छित फलदाई।
श्री जिनवर की अर्चा जग में, होती है सुखदाई॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ट ठ ड ढ ण' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त थ द ध न बीजाक्षर, सम्यक् बोध जगाते।
भवाताप मिट जाए उनका, जो जिन पूज रचाते॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'ट ठ ड ढ ण' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प फ ब भ म बीजाक्षर, ज्ञान की शक्ति जगाएँ।
दुख दारिद्र मिटाने वाले, जिन महिमा बतलाएँ॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'प फ ब भ म' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

य र ल व बीजाक्षर के, जो आराधना कारी।
आधि व्याधि को नाश प्राप्त हों, जिनगुण महिमाकारी॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'य र ल व' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श ष स ह बीजाक्षर सब, व्यंजन शुभकर गाए।
सर्व मनोरथ पूरण करने, वाले शुभ कहलाए॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं 'श ष स ह' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वर व्यंजन बीजाक्षर भाई, शक्तिशाली फलदायी।
भूत प्रेत व्याधी बाधाक्षय, रोग नशाते भाई॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं बीजाक्षर 'स्वर व्यंजन' पद विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(राज छन्द)

ॐकार मय जिनवर वाणी, द्वादशांग कहलाती है।
मृत्युंजयी भव्य जीवों को, श्रुत का ज्ञान कराती है॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं ॐकार रूप स्याद्वाद वाणी विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्रनाम से भूषित हैं जिन, शिव पद राह दिखाते हैं।
मुक्ति रमा को वरने वाले, मृत्युंजय पद पाते हैं॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सहस्रनाम विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष ये, पंच कल्याणक बतलाये।
इनकी अर्चा करने वाले, मृत्युंजयी शुभ पद पाएँ॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं पंचकल्याणक विभूषित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख सम्पदा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत भविष्यत वर्तमान में, तीर्थंकर होते चौबीस।
मृत्युंजयि होते अर्चाकर, बनते सिद्ध शिला के ईश॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व सुख शान्तिप्रद चतुःषष्टिः ऋद्धि विभूषित जिनेन्द्रेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सर्वसुख शान्तिकराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, तीनलोक में शुभकारी।
अर्चा करने वाले जग में, होते हैं मंगलकारी॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व सुखशान्ति प्रद त्रैलोक्यस्थ शाश्वत अकृत्रिम

जिन चैत्यालयेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सर्वसुख शान्तिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष अठारह नाशक जिनवर, मंगलमय कहलाते हैं।
जिनको ध्याने वाले प्राणी, मृत्युंजय पद पाते हैं।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व सुख शान्तिप्रद अष्टादश दोष रहित शाश्वत गुण विभूषित जिनेन्द्रेभ्यो नमः सर्वसुख रोगोपद्रव विनाशनाय सुख शान्तिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जिन चैत्य कहे।
चैत्यालय जिन धर्म जिनागम, पूज्य देव नव विशद रहे।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व सुख शान्तिप्रद ऋद्धि विभूषित मुनिभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सुख शान्तिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन माता अष्ट श्रेष्ठ शुभ, भवि जन की हैं सुखदायी।
मुनिवर पालन करके जिनका, मृत्युंजय बनते भाई।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व सुख शान्तिप्रद अष्ट प्रवचन मातृका विभूषित मुनिभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सर्वसुख शान्तिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजाक्षर शक्ती ऋषि जिनवर, जग से पूजे जाते हैं।
विशद आत्म शक्ती जाग्रत हो, तव पद शीश झुकाते हैं।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व सुख शान्तिप्रद त्रैलोक्यस्थ नवदेवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सर्वसुख शान्तिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हं झं वं व्हः हः मम सर्वापमृत्युञ्जय कुरू कुरू स्वाहा (लोंग या पुष्प से 9-27 या 108 बार जाप करें)

समुच्चय जयमाला

दोहा– **तीर्थंकर जिनदेव हैं, मृत्युंजयी त्रिकाल।**
मृत्युंजय पाने यहाँ, गाते हैं जयमाला।।

(चौबोला छन्द)

सम्यक् श्रद्धा ज्ञान आचरण, जीवन में अपनाते हैं।
कर्मश्रृंखला काट जीव वह, मृत्युंजय पद पाते हैं।।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु महिमा धारी।
जैनागम जिन धर्म जिनालय, जिन प्रतिमाएँ अविकारी।।
यंत्र मंत्र बीजाक्षर विधा, ऋद्धि सिद्धि या शक्ति महान।
तीन लोक के तीर्थ पूजते, मृत्युंजय अतिशय गुणखान।।
मृत्युंजय की शक्ती अनुपम, कहने में ना आती है।
निर्गुण को गुणवान दीन को, वैभववान बनाती है।।
पापी जन का पाप नाश हो, संकट कोई ना आते हैं।
शत्रू बनते मित्र स्वयं शुभ, भाग्योदय जग जाते हैं
व्याधी रोग असाद्य शोक कोइ, जीवन में ना आते हैं।
व्यन्तर आदी के संकट भी, प्रभु अर्चा से नश जाते है।।
शुभ योग धारने वाले के, नवग्रह की बाधा नश जाए।
हो अशुभ योग का चक्र यदि, वह भी न कोई रह पाए।।
यह तीन लोक में मृत्युंजय, जीवों पर करुणा बरसाए।
है लौकिक फल की बात कहाँ, जो मोक्ष महल में पहुँचाए।।
मृत्युंजय पूजा करने से, प्रतिकूल भी मीत बन जाते हैं।
भव बाधा विघ्न दूर होते, प्राणी सौभाग्य जगाते हैं।।
जो जाप करें मृत्युंजय का, वे इच्छित फल को पाते हैं।
कई रोग शोक आधी व्याधी, क्षणभर में ही नश जाते हैं।।

दोहा– **स्वजन सभी अनुकूल हों, कर मृत्युंजय जाप।**
जन्म-जन्म के शीघ्र ही, कट जाते हैं पाप।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व सुख शान्तिप्रद णमोकार महामंत्र-यंत्र बीजाक्षर शक्ति सहित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः सर्व रोगोपद्रव मृत्यु दुःख विनाशनाय सर्वसुख शान्तिकराय जयमाला पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **श्री जिनेन्द्र इस लोक में, मृत्युंजय दातार।**
अतः पूजते जिनचरण, नत हो बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

मृत्युञ्जय विधान की आरती

मृत्युञ्जय की करते हैं हम, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घी के लाए, जिनवार के दरबार।
हो जिनवर हम सब उतारें मंगल आरती...
मृत्यु को जीता है तुमने, सारे कर्म विनाशे।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया, आतम ज्ञान प्रकाशे॥
हो जिनवर...॥1॥
तुम्हें पूजने वाले अपने, सारे रोग नशावें।
आकस्मिक बाधाएँ कोई, कभी पास न आवें॥
हो जिनवर...॥2॥
भूत-प्रेत-व्यन्तर की बाधा, भक्तों से भय खावे।
तत्र-टोटका की बाधा भी, पास नहीं आ पावें॥
हो जिनवर...॥3॥
मृत्युञ्जय की पूजा करके, मृत्युञ्जय को पावें।
करते आरती भक्ति भाव से, निज के गुण प्रगटावें॥
हो जिनवर...॥4॥
विमल गुणों में अवगाहन कर, भरत क्षेत्र में आवें।
राग-त्याग पाके विराग फिर, 'विशद' गुणों को पावें॥
हो जिनवर...॥5॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य-खण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शकरपुर, लक्ष्मी नगर स्थित 1008 श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2539 वि. सं. 2070 भादो मासे कृष्ण पक्षे द्वितीया बृहस्पतिवार श्री मृत्युंजय विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं नि. स्वा.।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि. स्वा.।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वा.।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि. स्वा.।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वा.।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वा.।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।।
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।।
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.।

दोहा– **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥

नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥

कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥

मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥

मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया॥

सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥

गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा॥

गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥

अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥

दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥

अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।

सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥

विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर॥

जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥

परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥

भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥

मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ति भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥

जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ति से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥

तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥

प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥

एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥

लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥

भक्ति से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान॥
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष॥

– ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–इह विधि मंगल आरती कीजे....)

बाजे छम-छम-छम छमा छम बाजे घूंघरू-2
हाथों में दीपक लेकर आरती करूँ-2॥ टेक॥

कुपी ग्राम में जन्म लिया हैं, इन्दर माँ को धन्य किया हैं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(1) बाजे छम-छम-छम...

गुरुवर आप है बालब्रह्मचारी, भरी जवानी में दीक्षाधारी
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(2) बाजे छम-छम-छम...

विराग सागर जी से दीक्षा पाई, भरत सागर जी के तुम अनुयायीं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(3) बाजे छम-छम-छम...

विशद सागर जी गुरुवर हमारे, छत्तीस मूलगुणों को धारे
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(4) बाजे छम-छम-छम...

संघ सहित गुरु आप पधारे, हम सबके यहाँ मन हर्षायें
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(5) बाजे छम-छम-छम...

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी 1008 श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण महामण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह-1
70. त्रिविधान संग्रह-2
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. विशद पञ्चागम संग्रह
87. जिन गुरु भक्ति संग्रह
88. धर्म की दस लहरें
89. स्तुति स्त्रोत संग्रह
90. विराग वंदन
91. बिन खिले मुरझा गए
92. जिंदगी क्या है
93. धर्म प्रवाह
94. भक्ति के फूल
95. विशद श्रमण चर्या
96. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
97. इष्टोपदेश चौपाई
98. द्रव्य संग्रह चौपाई
99. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
100. समाधितन्त्र चौपाई
101. शुभषितरत्नावली
102. संस्कार विज्ञान
103. बाल विज्ञान भाग-3
104. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
105. विशद स्तोत्र संग्रह
106. भगवती आराधना
107. चिंतवन सरोवर भाग-1
108. चिंतवन सरोवर भाग-2
109. जीवन की मनःस्थितियाँ
110. आराध्य अर्चना
111. आराधना के सुमन
112. मूक उपदेश भाग-1
113. मूक उपदेश भाग-2
114. विशद प्रवचन पर्व
115. विशद ज्ञान ज्योति
116. जरा सोचो तो
117. विशद भक्ति पीयूष
118. विशद मुक्तावली
119. संगीत प्रसुन
120. आरती चालीसा संग्रह
121. भक्तामर भावना
122. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
123. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
124. विशद महाअर्चना संग्रह
125. विशद जिनवाणी संग्रह
126. विशद वीतरागी संत
127. काव्य पुञ्ज
128. पञ्च जाप्य
129. श्री चंवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
130. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
131. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह